हिन्दी (Elective) - 2019

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें:**
मनुष्य को उसकी योग्यता के अनुसार ही ईश्वर शरीर, स्वास्थ्य, विचार और बुद्धि देता है। वास्तव में यह सारी चीजें ईश्वर द्वारा दानस्वरूप नहीं बल्कि व्यक्ति को उसकी योग्यता द्वारा प्राप्त इच्छा के अनुसार ही मिलती हैं। समय व्यर्थ करना, विकृत मानसिकता के गुलाम होकर अपने जीवन को नष्ट करना, जिस वाद-विवाद में कोई अर्थ न हो उसे कह कर अपनी पंडिताई बताने की अपेक्षा एक, सत्य बोलना अधिक कीमती और सम्मानजनक होता है। सभा मंच पर खड़े होकर सफाईदार व्यर्थ की लंबी-चौड़ी बातें कर शेखी बघारने की अपेक्षा अपने घर की साफ-सफाई करके अधिक लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे। ऐसा विश्वास है।

(i) **गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दें।** 3

उत्तर. मनुष्य की योग्यता

(ii) **मनुष्य के लिए सम्मानजनक बातें क्या-क्या हैं?** 3

उत्तर. वास्तव में यह सारी चीजें ईश्वर द्वारा दानस्वरूप नहीं बल्कि व्यक्ति को उसकी योग्यता द्वारा प्राप्त इच्छा के अनुसार ही मिलती हैं।

(iii) **कौन-कौन सी बातें मनुष्य को भलाई से दूर करती हैं?** 3

उत्तर. समय व्यर्थ करना, विकृत मानसिकता के गुलाम होकर अपने जीवन को नष्ट करना, जिस वाद-विवाद में कोई अर्थ न हो उसे कह कर अपनी पंडिताई बताने की अपेक्षा एक, सत्य बोलना, अधिक कीमती और सम्मानजनक होता है।

(iv) **लेखक को किस बात का विश्वास है?** 3

उत्तर. सभा मंच पर खड़े होकर सफाईदार व्यर्थ की लंबी-चौड़ी बातें कर शेखी बघारने की अपेक्षा अपने घर की साफ-सफाई करके अधिक लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे। ऐसा विश्वास है।

(v) **मनुष्य को किस आधार पर ईश्वर का उपहार मिलता है?** 3

उत्तर. मनुष्य को उसकी योग्यता के अनुसार ही ईश्वर शरीर, स्वास्थ्य, विचार और बुद्धि देता है।

2. **निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें:** 1+5=5

जो राह हो हमारी उस पर दिया जला दे,
गति में प्रभंजनों का आवेग फिर सबल दे,
इस जाँच की घड़ी में निष्ठा कड़ी अचल दे,
हम दे चुके लहू हैं, तू देवता विभा दे,
अपने अनल विशिख से आकाश जगमगा दे।
प्यारे स्वदेश के हित वरदान माँगता हूँ,
तेरी दया विपद में भगवान माँगता हूँ।

(i) **कवि कहाँ जलता दिया चाहता है?**

उत्तर. जिस राह पर चल रहे हैं उस पर कवि दिया जलाना चाहता है।

(ii) **कवि किस प्रेम की बात करता है?**

उत्तर. स्वदेश प्रेम

(iii) **कवि वरदान क्यों माँगता है ?**

उत्तर. कवि स्वदेश के हित के लिए वरदान माँगता है।

(iv) **कवि भगवान से क्या-क्या माँगता है?**

उत्तर. कवि भगवान से निष्ठा, दया आदि माँगता है।

(v) **पद्यांश से उपसर्ग युक्त दो शब्दों का चयन करें।**

उत्तर. प्रभंजनों, स्वदेश

3. **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखें:** 10

(a) **मेरी पहली विदेश यात्रा**

(b) **राष्ट्र निर्माण में छात्रों की भूमिका**

(c) **मेरे प्रिय कवि**

(d) **पर्यावरण और हम**

उत्तर. समाज के निर्माण और पुनर्निर्माण तथा राष्ट्र की प्रगति में युवाजन की भूमिका महती होती है। नौजवान अधिक ऊर्जा-सम्पन्न, स्फूर्तियुक्त, उत्साही, उमंग और जोश से भरे हुए कुछ नया कर गुजरने के हौसलों से पूर्ण होते हैं। वे लक्ष्य की ओर एकाग्रचित से तीर की तरह आगे बढ़ने वाले होते हैं और लक्ष्य-वेध के बाद ही दम लेते हैं। युवाजन अपनी रचनात्मक क्षमता का उपयोग अशिक्षा, निरक्षरता, सामाजिक बुराइयों और कुरीतियों के उन्मूलन में कर सकते हैं। समाज में जागरूकता लाने में उनका प्रयास नया इतिहास रच सकता है, रोग, बीमारी, महामारी, प्राकृतिक आपदाओं, पर्यावरण सुरक्षा आदि के काम युवा-वर्ग आसानी से कर सकते हैं। समाज निर्माण का हरा काम, राष्ट्र की हर प्रगति के दायित्व को निभाने में सरकार असमर्थ होती है। युवा-वर्ग श्रमदान द्वारा पुल-पुलियों के निर्माण में, नदी-नालों की सफाई में, सड़कों की मरम्मत में, पीड़ितजनों की सेवा में आगे बढ़कर हिस्सा ले सकते हैं। वर्तमान की प्रत्येक चुनौती का मुकाबला युवा-वर्ग ही कर सकता है।

समाज और राष्ट्र के निर्माण और प्रगति की जिम्मेवारी युवा-वर्ग तभी निभा सकते हैं, जब वे स्वयं अपने को सुसंस्कारों में ढालें! अपने चरित्र का निर्माण करें। सदाचरण को अपने जीवन में आत्मासात् करें। इन्हें सामाजिक मूल्यों की अच्छाई-बुराई, प्रासंगिकता, अप्रासंगिता के सम्बन्ध में स्वयं विवेकपूर्वक निर्णय लेना चाहिए। श्रेष्ठ सामाजिक मूल्यों के प्रति समाज को जगाना युवकों का चरित्र दायित्व होता है। साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरता, हिंसा और सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध युवा-वर्ग ही संघर्ष कर सकते हैं। और समाज को भी इनसे संघर्ष करने के लिए तैयार कर सकते हैं। उनके इन उद्यमों और उद्योगों से स्वस्थ समाज और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण सम्भव हो सकेगा।

(c) **मेरे प्रिय कवि**

उत्तर. भगवान बुद्ध के बाद भारत में यदि कोई लोकनायक हुआ तो गोस्वामी तुलसीदास। भारत का लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय स्थापित कर सके। समस्त तुलसी साहित्य समन्वय की विराट चेष्टा है। तुलसीदास केवल मेरे नहीं बहुतों के प्रिय कवि हैं। उनकी लोकप्रियता के कारण ही हम आज भी तुलसी जयन्ती मनाते

हैं। उनका रामचरितमानस हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है।

तुलसीदास के जन्म के बारे में काफी मतभेद है। बहुमत के आधार पर यह माना जाता है कि उनका जन्म बाँदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था। उनके आरम्भिक जीवन में अनेक कष्ट आये। आर्थिक कष्ट के साथ ही साथ उन्हें तीखे अपमान, उपेक्षा और तिरस्कार के बाणों को भी झेलना पड़ता। फिर भी, वे कभी विचलित नहीं हुए। काशी जाकर उन्होंने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया और विद्वान बन गये।

उनका विवाह रत्नावली नामक रूप-गुणवती कन्या से हुआ। विवाह के बाद कुछ दिनों तक वे पत्नी के प्रेम में सब कुछ भूले रहे। उनका वह प्रेम मोह में परिणत हो गया था। रत्नावली ने तुलसीदास के व्यवहार को अपनी मर्यादा के विरुद्ध देखकर उन्हें खूब फटकारा। पत्नी से अपमानित होने पर पत्नी के प्रति उनका मोह टूट गया और घर परिवार से उनका तीव्र वैराग्य उत्पन्न हो गया। उनका सोया हुआ ज्ञान जाग उठा और वे रामचरित मानस की रचना में जुट गये।

तुलसीदास को हम एक साथ महाकवि, समाज सुधारक, नेता और क्रांतिकारी विचारक कह सकते हैं। जिस समय तुलसीदास का आविर्भाव हुआ था उस समय मुगलशासकों के अत्याचारों से हिन्दू जनता पीड़ित थी। धर्म और संस्कृति खतरे में पड़ गयी थी। विभिन्न सम्प्रदायों के लोग प्राय: झगड़ते रहते थे। उनके काव्य - ग्रंथों को पढ़कर लोगों में धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना जागृत हुई। इसके साथ ही साथ साम्प्रदायिक तानव कम हुआ।

तुलसीदास ने अपनी रचनाओं से सिद्ध का दिया कि भगवान को भजने का, उनकी पूजा का अधिकार सभी को है। भगवान को भक्त प्यारे हैं, चाहे वह किसी भी जाति या वर्ग का हो। जो भगवान का सच्चा होगा, उसे मुक्ति अवश्य मिलेगी।

तुलसीदास के अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं। उनका रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य है। इसके अतिरिक्त कवितावली, गीतावली, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल, बरवैरामायण, रामज्ञाप्रश्न, रामललानहछू आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

तुलसीदास ने अपनी कृतियों से रसातल में जाती हुई धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को नष्ट होने से बचाया और मानव जीवन का आदर्श हमारे सामने उपस्थित किया। यही कारण है कि तुलसीदास को हिन्दी का सबसे लोकप्रिय कवि माना जाता है।

(d) **पर्यावरण और हम।**

उत्तर. पर्यावरण के प्रति चिन्ता का मुख्य कारण है कि पर्यावरण गम्भीर रूप से प्रदूषित हो गया है। पर्यावरण-प्रदूषण का सम्पूर्ण सृष्टि का संतुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण प्रदूषण की सबसे बड़ी जिम्मेवारी मानव समुदाय पर ही है।

पर्यावरण प्रदूषण का प्रथम कारण वैज्ञानिक आविष्कार है। दूसरा प्रमुख कारण मनुष्य की आदतें हैं। तीसरा कारण प्राकृतिक है, परन्तु इसका प्रदूषण में योगदान सबसे न्यूनतम है। वाहनों एवं उद्योगों द्वारा उत्सर्जित धुआँ, विषैली गैसें, उनके द्वारा फैलाये गये कणीय प्रदूषण आदि ने भयानक रूप से पर्यावरण को प्रदूषित किया है।

वनों की अंधाधुंध कटाई से वन जीवों का आश्रय उजड़ गया। ऑक्सीजन की कमी हो गयी। बाढ़ की आवृत्तियाँ बढ़ीं। वन जीवों की खाद्य-शृंखलाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। भूमि की अनुर्वरकता बढ़ी। हरियाली के विनष्ट हो जाने से वर्षा में निरन्तर कमी आती गयी।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण यह धरती मनुष्य के रहने लायक नहीं रह गयी है। जल, वायु, पृथ्वी सभी प्रदूषित हो गये हैं। ऋतुचक्र प्रभावित हुआ है। प्रदूषित जल और वायु के सेवन के कारण मनुष्य में अनेक जटिल रोग उत्पन्न हुए हैं। वनों की कटाई के कारण अनेक जीव विलुप्त हो चुके हैं। स्प्रे, मच्छर एवं कीटनाशी औषधियों के छिड़काव के कारण अनेक लाभप्रद जीव और कीट-पतंग विनष्ट हो गये, हैं, जिनका सीधा असर कृषि पर पड़ा है। असाध्य बीमारियों और विकलांगताओं में बेतहाशा वृद्धि हुई है।

पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए सर्वप्रथम प्रकृति के संतुलन को बनाने की आवश्यकता है। वनों की कटाई रोकनी होगी। सघन वनरोपण का कार्यक्रम चलाना होगा। विलुप्त होते वन जीवों को सुरक्षा प्रदान करनी होगी। जलस्रोतों की सफाई पर ध्यान देना होगा। उद्योगों के बहिस्रावों को उचित ढंग से निपटाना होगा। तेल टैंकरों का रिसाव रोकना होगा। कारखानों में पर्यावरण सुरक्षा के उपकरणों को लगाना होगा। प्रकृति के असीमित दोहन को रोकना होगा। मनुष्य को अपनी आदतों में परिवर्तन लाना होगा। पर्यावरण के कठोर कानूनों का पालन सख्ती से कराना होगा।

फिर भी, देश के सभी नागरिकों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाये बिना इस समस्या का सही समाधान सम्भव नहीं है।

4. **अपने क्षेत्र में मलेरिया फैलने की संभावना को देखते हुए जिले के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखें।** 5

उत्तर. सेवा में,

अध्यक्ष,

नगर निगम, राँची।

विषय: नगर के विभिन्न क्षेत्रों में गंदगी एवं मच्छरों की समस्या तथा नगर में मलेरिया और डायरिया का बढ़ता प्रकोप।

महोदय,

विदित है कि राँची नगर क्षेत्र में मच्छरों का प्रकोप निरन्तर बढ़ता जा रहा है। बरसात तो बरसात ही है, अन्य मौसमों में भी इस घनी आबादी वाले क्षेत्र की नालियाँ गंदे जल से भरी रहती हैं। जमा हुआ पानी तो मच्छरों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि करता है। हमारे क्षेत्र में अनेक लोग मलेरिया से ग्रस्त हैं। अब तो डेंगू भी अपनी लीला दिखाने को तत्पर है।

पिछले वर्ष राँची नगर के अनेक लोगों के जीवन को मलेरिया लील गया। इसी तरह डायरिया के कारण भी अनेक मौतें हुई हैं। इन सबका एकमात्र कारण नगरीय क्षेत्रों में यत्र-तत्र-सर्वत्र फैली गन्दगी एवं नाले-नालियों आदि के पानी का जमाव है। बजबजाती नालियाँ और गढ्ढों के पानी में पनपते मच्छरों के कारण मलेरिया ने इस शहर में आतंक फैलाया है। डायरिया का भी मुख्य कारण अनेक प्रकार की गंदगी, प्रदूषण एवं दूषित पेयजल है।

अथवा

स्वयं के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र लिखें।

उत्तर. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

आदर्श महाविद्यालय, गिरिडीह।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि कल विद्यालय से लौटते समय मेरी साइकिल एक ऑटो रिक्शा से टकरा गयी थी। इसके परिणामस्वरूप मेरे हाथ की हड्डी टूट गयी है तथा दोनों टाँगे घायल हो गयी है। अत: मैं अभी चलने-फिरने में पूर्णत: असमर्थ है। डॉक्टर ने मुझे दो सप्ताह का विश्राम करने का परामर्श दिया है।
अगले सोमवार से हमारी अर्धवार्षिक परीक्षा भी शुरु हो रही है। मैं उसमें भी सम्मिलित नहीं हो सकूँगा।
आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मुझे दो सप्ताह तक अवकाश प्रदान करने तथा आगामी परीक्षा से छूट देने की कृपा करें।
सधन्यवाद

दिनांक : 10-3-2016 आपका आज्ञाकारी छात्र
मोहित महतो,
कक्षा- 10 'अ'

प्र.5. **आदर्श समाचार-लेखन की विशेषताएँ बतलाइए।** 5

उ. **समाचार लेखन की विशेषताएँ-**

1. समाचार के तत्व- समाचार में रोचकता, नवीनता, निष्पक्षा एवं विश्वसनीयता का होना अपेक्षित है।

2. विशाल समुदाय के लिए लेखक- अखबार और पत्रिका के लिए लेखक और पत्रकारों को ध्यान में रखना होता है कि वह ऐसे विशाल समुदाय के लिए लिख रखा है, जिसमें एक विद्वान से लेकर कम पढ़े-लिखें मजदूर और किसान सभी शामिल है।

3. सहज, सरल और रोचक भाषा-शैली- पाठकों के भाषा-ज्ञान के साथ-साथ उनके शैक्षिक ज्ञान और योग्यता का विशेष ध्यान रखते हुए समाचार लेखक जटिल से जटिल एवं गूढ़ से गूढ़ विषयों को भी अत्यन्त सहज, सरल और रोचक भाषा-शैली में लिखता है ताकि उसकी बात सबकी समझ में आसानी से आ सके।

4. 'उल्टा पिरामिड-शैली'- समाचार लेखन 'उल्टा पिरामिड-शैली' में किया जाता है। इस शैली में किसी समाचार, घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले अनुच्छेद में लिखा जाता है। इसके बाद महत्व के घटते क्रम से महत्वपूर्ण बातें लिखी जाती है।।

5. छह ककार- समाचार लिखते समय पत्रकार मुख्यत: छह ककारों का उत्तर देने का प्रयत्न करता हैं ये छह ककार है-, 'क्या हुआ', 'किसके साथ हुआ', 'कहाँ हुआ?' किसी समाचार या घटना की रिपोर्टिंग करते समय इन छह ककारों पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

6. 'इन्ट्रों'- समाचार के 'इन्ट्रो' या 'मुखड़े' का आशय यह है किसमाचार का पहला पैराग्राफ सामान्यत: समाचार का मुखड़ा कहलाता है। इसमें आरंभ की दो-तीन पंक्तियों में सामान्यत: तीन या चार ककारों को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है। ये चार ककार है- 'क्या, कौन, कब और कहाँ'

7. समाचार की बॉडी- समाचार के 'मुखड़े' यानी 'इन्ट्रो' को लिखने के बाद समाचार की बॉडी और समापन आता है जिसमें छ: में से दो शेष ककारों- 'कैसे और क्यों' जवाब दिया जाता है।

अथवा

एक अच्छी रिपोर्ट की विशेषताएँ लिखें।

उत्तर. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) की विशेषताएँ-

1. किसी भी प्रतिवेदन को तथ्यों पर आधारित होना चाहिए।
2. उसकी सरल-सीधी भाषा पूर्ण रूप से होनी चाहिए जिसमें मुहावरे-लोकोक्तियों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। भाषा को अलंकारों और लक्षणा शब्द शक्ति से रहित होना चाहिए।
3. किसी भी शब्द या वाक्य से अनेक अर्थ नहीं निकलने चाहिए।
4. प्रतिवेदन में प्रथम पुरुष (मैं या हम) का प्रयोग, नहीं किया जाना चाहिए।
5. सभी तथ्य सत्य पर आधारित और विश्सनीय होने चाहिए। उनमें कल्पना का पुट नहीं होना चाहिए।
6. रिपोर्ट में केवल महत्वपूर्ण तथ्यों को ही स्थान दिया जाना चाहिए। प्रतिवेदन संक्षिप्त होनी चाहिए।
7. सभी तथ्य क्रमानुसार होने चाहिए ताकि उनसे पूरी जानकारी व्यवस्थित सूचनाएँ ही प्राप्त हो।
8. प्रतिवेदन को उचित शीर्षक देना चाहिए जिससे प्रतिवेदन की विषय संबंधी जानकारी प्राप्त हो सके।
9. प्रतिवेदन को विषय एवं तथ्यों के आधार पर अनुच्छेदों में बँटा होना चाहिए।

6. **प्रतिवेदन की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करें।** 5

उत्तर. 'बृहत् हिन्दी कोश' में प्रतिवेदन का आशय इस प्रकार स्पष्ट किया गया है-''किसी घटना, कार्य योजना आदि के सम्बन्ध में छानबीन, पूछताछ आदि करने के बाद तैयार किया गया विवरण जिस अधिकारी या सभा आदि के समक्ष प्रस्तुत किया जाता हो, उसे 'प्रतिवेदन' कहते हैं।''

प्रतिवेदन की एक सरल परिभाषा यह हो सकती है – ''किसी सक्षम पीठासीन पदाधिकारी (Presiding officer) के अधीन गठित समिति या आयोग (Commission) द्वारा किसी विशेष मामले की जाँच-पड़ताल और छानबीन पर आधारित विवरण या मन्तव्य आदि के अभिलेख (Record) को प्रतिवेदन कहते हैं।''

साधारणतया अँगरेजी के रिपोर्ट (Report) शब्द के पर्याय रूप में हिन्दी में 'प्रतिवेदन' शब्द का प्रयोग किया जाता है किन्तु प्रतिवेदन रिपोर्ट नहीं होता। रिपोर्ट समाचार माध्यमों में 'सूचना' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। किसी आपराधिक घटना के बारे में थाने में जो शिकायत की जाती है, उसे भी रिपोर्ट कहते हैं। किसी घटना या महत्त्वपूर्ण समाचार के पूर्ण रिपोर्ट जानने की इच्छा को 'विवरण' कहना उचित है। तात्पर्य यह है कि प्रतिवेदन रिपोर्ट से भिन्न होता है।

अथवा

प्रश्न. 'समाज में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण' पर एक सम्पादकीय लिखें।

उत्तर. साम्प्रदायिकता एक मनोभव है जो आदमी को विस्तार से संकुचित बनाता है। यह ऐसी भावना है जिससे आदमी की मुल्यवता समाप्त हो जाती है। मानवता के नाम पर यह दानवता का आवरण है। स्नेह, प्रेम और भ्रातृत्व की कैंची है साम्प्रदायिकता।

साम्प्रदायिकता का जन्म हमारे देश में तब हुआ जब इस साम्प्रदायिकता को अंग्रेजों ने और अधिक हवा दी। धर्म के नाम पर हिन्दु और मुसलमानों के बीच फूट और वैर का ऐसा विरवा लगाया कि उससे आज तक उबर पाना आसान नहीं। 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाए अँगरेजों ने भारत में साम्प्रदायिकता की भावना को हमेशा

पल्लवित और पुष्पित किया। इसका भयानक परिणाम हुआ भारत का विभाजन साम्प्रदायिकता एक सुषुप्त ज्वालामुखी की तरह है जो समय-समय पर जागती रहती है।

साम्प्रदायिकता की इस बीमारी का इलाज हो सकता है। इसके लिए हमें आध्यात्मिक दृष्टि में परिवर्तन करना होगा। सरकार साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले संगठनों, संस्थानों, पत्रों को केवल रोके नहीं बल्कि उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों को सजा दें। हमें उदार और व्यापक जीवन दृष्टि से काम करना चाहिए।

7. सप्रसंग व्याख्या करें: 8

लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय-समीर सहारे,
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए-समझ नीड़ निज प्यारा।

अथवा

भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।
तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे।।

8. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें: 3x2=6**

(क) प्रगतिवादी कविता 'यह दीप अकेला' के आधार पर 'लघु मानव' के अस्तित्त्व और महत्त्व पर प्रकाश डालें।

उत्तर- 'दीप' व्यक्ति का प्रतीक है। दीप को कवि ने स्नेह, गर्व और मद से परिपूर्ण इसलिए कहा है क्योंकि वह इनसे परिपूर्ण होकर ही अपनी लौ को ऊपर उठाये, गर्व और मद (अहं) से भरकर चलता है। वह व्यक्ति, जो समर्थ है, किन्तु अकेला है, उसे किसी कारण पंक्ति से अर्थात् समाज से पृथक जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। कवि समन्वय की भावना को हृदय में रखकर उसे पंक्ति में जोड़ने का आह्वान कर रहा है।

(ख) हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है? स्पष्ट करें।

उत्तर. हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार इसलिए कहा है क्योंकि यदि अन्य की भाँति बेईमान, स्वार्थी, धोखेबाज और प्रपंची होता तो उसके समक्ष इसकी नौबत ही नहीं आती।

(ग) देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान क्यों नहीं किया जा सकता?

उत्तर. देवी सरस्वती का उदारता का गुणगान इसलिए असंभव है क्योंकि वे अपार गुणों की खान हैं। निरन्तर उनकी उदारता का नया-नया पक्ष (रूप) उजागर होता रहता है। इसी कारण ज्ञानी से ज्ञानी सिद्ध पुरुष, तपोवृद्ध और ऋषिराज उसकी उदारता की थाह नहीं पा सके। ये तो खैर मनुष्य ही ठहरे, स्वयं उनके चतुर्मुख पति ब्रह्मा, त्रिकालदर्शी पुत्र पंचमुख शिव और षडमुख पौत्र कार्तिकेय जैसे निकट सम्बन्धी भी उनकी उदारता को सम्पूर्णता में नहीं जान पाये।

(घ) कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर. कोयल और भौरों का कलरव प्रियतमा को संयोग के पलों में प्रेम को और अधिक उद्दीप्त करता था किंतु विरह की स्थिति में यही कलरव उसे कष्टदायक लग रहा है। अत: वह इस कलरव को सुनकर और अधिक कष्ट नहीं पाना चाहती तथा अपने कानों को हाथों से बंद कर लेती है।

9. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट करें: 3x2=6**

(क) यह धीरे-धीरे होना,
धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय
दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को,
इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है,
कि हिलता नहीं है कुछ भी,
कि जो, चीज जहाँ थी-
वहीं पर रखी है।

उत्तर. काव्य सौष्ठव-

1. कविता के प्रस्तुत अंश में बनारस को सत्यम् शिवम् सुंदरम् का जीवंत प्रतीक माना है।
2. 'धीरे-धीरे', 'वहीं पर' तथा 'आधा' शब्दों की पुनरावृत्ति में भावाभिव्यक्ति की गंभीरता उत्पन्न हुई है।
3. भाषा को सहजता और प्रवाह में भावों का सहत प्रकटीकरण इस काव्यांश का आकर्षण है।
4. काव्यांश की

(ख) कंत कहाँ हौं लागौं हियरें। पंथ अपार सूझ नहिं नियरें।
सौर सुपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूढ़ी।

उत्तर. भाव सौंदर्य-नायिका अपने स्वामी से कहती है कि आपके पास आने का मार्ग तो कई सारे है परंतु नजदीक का मार्ग मुझे सूझ नहीं रहा और विरह रूपी वायु उसे पीड़ा पहुँचा रही हैं।

विशेष: (i) अनुप्रास अलंकार है।
(ii) भाषा अवधी है

(ग) सत्य शायद जानना चाहता है
कि उसके पीछे हम कितनी दूर तक भटक सकते हैं,
कभी दिखता है सत्य
और कभी ओझल हो जाता है।

उत्तर. प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **अंतरा भाग-2** में संकलित कविता 'सत्य' से उद्धृत है। इन काव्य पंक्तियों के कवि विष्णु खरे हैं। कवि ने इन पंक्तियों में युधिष्ठिर की पुकार को अनसुनी करते हुए विदुर घने जंगलों में भागे चले जाते हैं। इसी प्रकार सत्य किसी की पुकार नहीं सुनता, बल्कि ओझल हो जाता है। युधिष्ठिर को सत्य को जाननेवाले का और विदुर को सत्य का प्रतीक बनाते हुए कवि कहना चाहता है कि आज सत्य का कोई एक स्थिर रूप, आकार का पहचान नहीं है, जो उसे स्थायी बना सके। कवि कहते हैं कि सत्य आदमी को परखना चाहता है कि वह उसके पीछे कितनी दूर तक भाग सकता है।

(घ) बहुत दिनान को अवधि आसपास परे,
खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को
कहि कहि आवन छबीले मनभावन को,
गहि गहि राखति ही दै दै सनमान को।

उत्तर. 'सिंधु तर यो उनको बनरा' में उदात्त अलंकार का प्रयोग किया गया है। समुद्र तरने से रामदूत हनुमान के उदात्त भाव का वर्णन प्रस्तुत किया है। 'तेलनि तूलनि' में अनुप्रास अलंकार की सुन्दरता देखने योग्य है। 'बाँधोई बाँधत सो न बन्यो' में अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है। भाषा सरस तथा सरल है।

10. सप्रसंग व्याख्या करें: 8

उसका मुँह पीला था, आँखें सफेद थीं, दृष्टि भूमि से उठती नहीं थी। प्रश्न पूछे जा रहे थे। उनका वह उत्तर दे रहा था। ध र्म के दस लक्षण वह सुना गया, नौ रसों का उदाहरण दे गया।

उत्तर. बालक से जितने भी प्रश्न पूछ गये वे प्राय: उसकी उम्र और योग्यता से ऊपर के प्रश्न थे, जैसे - धर्म के दस लक्षण, नव रसों के उदाहरण, पानी के तापक्रम से चार डिग्री के नीचे शीतल जल में मछली के जीवित रहने और चन्द्रग्रहण का वैज्ञानिक कारण तथा अभाव को पदार्थ मानने या न मानने का शास्त्रोक्त कथन इत्यादि।

अथवा

दुरंत जीवन-शक्ति है। गठिन उपदेश है। जीना भी एक कला है। लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है।

जियो तो प्राण ढाल दो जिंदगी में मन ढाल दो जीवन रस के उपकरणों में ! ठीक है।

उत्तर. **सप्रसंग व्याख्या : (i) प्रसंग :** प्रस्तुत गद्यावतरण डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबन्ध 'कुटज' से अवतिरत है। इस अवतरण में लेखक ने कहा है कि कुटज अपनी अदम्य जीवनी-शक्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर मनुष्य मात्र को जीने की कला सीखाता है।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें: 3x2=6

(क) वैदिक काल में हिन्दुओं में कैसी लॉटरी चलती थी, जिसका जिक्र लेखक ने किया है?

उत्तर. वैदिक काल में नर या नारी परस्पर एक-दूसरे के गुणों आदि को परखकर माता-पिता एवं समाज के समक्ष एक-दूसरे का वरण करते थे। उस समय नर नारी के समक्ष कुछ पहेलियाँ या प्रश्न उपस्थित करता था और नारी को उसका उपयुक्त उत्तर देना होता था। इस परीक्षा में अनुर्त्तीर्ण होने पर नर नारी का वरण नहीं करता था। लेकिन नारी को अन्य पुरुष अवसर प्रदान करते थे और आगामी प्रयासों में से किसी एक में सफल हो जाने पर उसे नारी को पुरुष पत्नी के रूप में अंगीकार कर लेता था। विभिन्न स्थलों की मिट्टी के बने ढेलों के उपयुक्त चयन की परम्परा इसी प्रकार की स्वयंवर की प्रथा थी जिसमें नर पूछता था, नारी बूझती थी।

(ख) आँखें बन्द रखने और आँखें खोलकर देखने के क्या परिणाम निकले?

उत्तर. आँखे बंद करने से काम पहले की तुलना में अधिक व अच्छा होने लगा, उत्पादन बढ़ गया।

आँखे खोलने से लोग एक-दूसरे को न देख सके, अपितु उनके समझ राजा खड़ा था। राजा को पता चल गया कि जनता ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है और वे दण्ड के अधिकारी हो गए।

(ग) औद्योगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे?

उत्तर. भारत के योजनाकारों ने औद्योगीकरण का जो मार्ग चुना और जैसा मॉडल बनाया, उसमें उन्होंने प्रकृति, परिवेश और पर्यावरण की घोर उपेक्षा कर की। असंख्या गाँव उजाड़ दिये गये। जंगलों और वनस्पतियों का सफाया कर दिया गया। नदी, तालाबों आदि के पारम्परिक जल-स्रोत अवरुद्ध हो गये। फलत: लोगों का विस्थापन हुआ। पशु-पक्षियों, जंगली और जल-जीवों तथा वनस्पतियों की अनेक दुर्लभ प्रजातियाँ विलुप्त हो गयीं। भू-आकृतियाँ बदल गयीं। भूमि के स्वाभाविक गुणों का ह्रास हुआ। फलत: इन सबका पर्यावरण पर भयावह प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इसी कारण हमारा पर्यावरण बुरी तरह नष्ट हो गया।

(घ) 'दूसरा देवदास' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करें।

उत्तर. 'दूसरा देवदास' शीर्षक शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'देवदास' के नायक 'देवदास' और उसकी नायिका 'पारो' की याद दिला देता है। नामों में साम्य अवश्य है किन्तु शीर्षक के पूर्व जुड़ा विशेषण 'दूसरा' शरत् के उपन्यास के नायक और नायिका से भिन्नता दर्शाता है। नायिका का नाम 'पारो' सुनकर युवक हँस कर अपना परिचय (नाम) 'संभव देवदास' के रूप में देता है और नायिका पारो मंसा देवी के मंदिर में मनोकामना की गाँठ बाँधती हुई सोचती है कि 'बाँधों इधर और बँध उधर जाती है' तो स्पष्ट है कि उसका मन भी सम्भव से बँध चुका है। संभव है कि उन दोनों का प्यार, भविष्य में अपनी मंजिल पा ले। कहानी में इस सुखद अंत का भी संकेत है। इसलिए विशेषण सहित इसका शीर्षक 'दूसरा देवदास' पूर्णत: सटीक एवं सार्थक है।

(ङ) कुटज क्या केवल जी रहा है?-लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है?

उत्तर. कुटज निर्भीकता, स्वाभिमान, मन और ह्रदय की दृढ़ता, सुख-दु:ख, प्रिय और अप्रिय सबको समभाव से स्वीकार करने की सींख देता है। वह चाटुकारिता से, अंधविश्वास, ग्रह-नक्षत्रों की चाल की भवभीत मनोदशा से दूर रहकर, 'ह्रदयेनापराजित:' बनकर जीने की कला सीखता है। वह अपराजित स्वभाव और अविचलित जीवन-दृष्टि प्रदान करता है।

12. कवि केदारनाथ सिंह अथवा लेखक भीष्म साहनी का साहित्यिक परिचय दें। 6

उत्तर. भीष्म साहनी का जन्म सन् 1915 ई. में पाकिस्तान के रावलपिंडी में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर में हुई जबकि अँग्रेजी और उर्दू की उच्च शिक्षा उन्होंने लाहौर से प्राप्त की। उन्होंने अँग्रेजी में एम.ए. किया तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ये प्रगतिशील लेखक संघ तथा अफ्रो-एशियाई लेखक संघ से भी संबंधित रहे। उनकी प्रमुख कृतियों में भाग्य रेखा, पहला पाठ, भटकती राख, पटरियाँ, शोभायात्रा, निशाचर, पाली, डायन (कहानी संग्रह), झरोखे, कड़ियाँ, तमस, बसंती, मम्मादास की माडी, नीलू नीलिमां, नीलोफर (उपन्यास) माधवी, कविरा खड़ा बाजार में, मुआवजे (नाटक), गुलेल का खेल (बालोपयोगी कहानियाँ) आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

तमस उपन्यास के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उनके साहित्यिक अवदान के लिए हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने उन्हें शलाका सम्मान से सम्मानित किया।

भीष्म साहनी की भाषा उर्दू मिश्रित व्यावहारिक हिन्दी है। भाषा पूर्वाग्रह से मुक्त और लोकपरक है। उन्होंने अपनी भाषा में मुहावरों एवं अँग्रेजी भाषा का प्रयोग किया है।

भीष्म साहनी की शैली की विशेषता उनकी सरलता एवं सहजता है। उनकी भाषा-शैली में पंजाबी भाषा की सोंधी महक भी महसूस की जा सकती है। साहनी जी छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करके विषय को रोचक एवं प्रभावपूर्ण बना देते हैं।

13. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दे: 3x3=9

(क) सूरदास अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?

उत्तर. सूरदास अंधा था, भिखारी था। लोगों के अनुसार एक अंधे भिखारी को बेबस और लाचार होना चाहिए। उसकी जिन्दगी अभावों से भरी होनी चाहिए। भिखारी का आत्मासुखी और संतोषी होना अन्य लोगों को अखरने लगा था। एक भिखारी के पास पाँच सौ रुपये जमा हों, सहसा लोग इस पर विश्वास भी नहीं करेंगे और यह बात स्वयं उसके लिए लज्जा और ग्लानि की बात होगी। अंधे भिखारी के पास धन होना ही लज्जा की बात थी। लेकिन वह इस धन से कई काम करना चाहता था। गया जाकर पिंडदान करना, मिठुआ का ब्याह करना और कुआँ बनवाना चाहता था परन्तु इस तरह कि लोग आश्चर्य करें कि उसके पास इतने रुपये कहाँ से आये? लोग यही समझें की दीनों पर ईश्वर ही कृपा करते हैं। सूरदास सोचता था कि भिखारियों के लिए धन-संचय से बढ़कर दूसरा कोई पाप नहीं है। इसी कारण वह अपनी आर्थिक हानि न केवल जगधर से अपितु सभी लोगों से छिपाना चाहता था।

(ख) महीप अपने विषय में बात पूछे जाने पर उसे टाल क्यों देता था?

उत्तर. महीप घोड़ों के द्वारा सवारी ढोकर रुपये कमाता था। जब रूप सिंह और शेखर गाँव आते थे, तो वे उसी के घोड़ों पर बैठकर माही जाते थे। रास्ते में बातचीत करते समय महीप को ज्ञात होता है कि वह रूप सिंह का रिश्तेदार है। इसलिए वह अपने बारे में कुछ नहीं बोलता था।

महीप अपनी माँ की मृत्यु का कारण अपने पिता को मानता था। वह घर छोड़कर भाग गया था और घर लौटना नहीं चाहता था। अत: वह अपने विषय में पूछे जाने पर टाल देता था।

(ग) बिसनाथ पर क्या अत्याचार हो गया?

उत्तर. बालक बिसनाथ पर शैशव अवस्था में अत्याचार हो गया था। लेखक ने अपने बचपन की अविस्मरणीय घटना को अत्याचार कहकर संबोधित किया है। बच्चे का माँ का दूध पीना मानव जीवन की सार्थकता है और किसी बच्चे का छोटा भाई जन्म ले तो उसका दूध पीना छूट जाना स्वाभाविक ही है। जिस बच्चे का दूध पीने का अधिकार छिन जाता है उसपर अत्याचार तो होता ही है। जीवन का सबसे बड़ा धन लुट जाना निस्संदेह अत्याचार है।

लेखक के बचपन में जब उनके छोटे भाई का जन्म हुआ तो उनका दूध छूट गया। वह दूध कटहा हो गया। माँ के दूध पर छोटा भाई कब्जा जमा चुका था। बालक बिसनाथ भी आसानी से दूध पीना छोड़ने वाला नहीं था। उसने गाय का दूध पीने से मना कर दिया। उसकी माँ ने अपने स्तनों पर उबटन का लेप लगा दिया और उसे दूध पिलाया तो कड़वा लगा। यह एक नये ढंग का अत्याचार था। मगर बालक इस तरकीब के आगे विफल हो गया और उसको अत्याचार बर्दाशत करना पड़ा।

(घ) अब मालवा में कैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था? उसके क्या कारण हैं?

उत्तर. लेखक ने मालवा की वर्षा की कमी के लिए जिम्मेवार कारणों की पड़ताल की है। वे मानते हैं कि पर्यावरण-प्रदूषण के कारण मौसम में जो परिवर्तन आए हैं, उनके प्रभाव से मालवा भी अछूता नहीं है। समुद्रों का पानी गर्म हो रहा है, ध्रुवों पर जमी बर्फ पिघल रही है। अमेरिका और यूरोप के विकसित देशों से वातावरण को गर्म करनेवाली कार्बन-डाइ-ऑक्साइड गैसों ने मिलकर धरती के तापमान को तीन डिग्री सेल्सियस बढ़ा दिया है। ये गैंसें सबसे ज्यादा अमेरिका और फिर यूरोप के विकसित देशों से निकलती हैं। अमेरिका इन्हें रोकने को तैयार नहीं है। वह नहीं मानता है कि ध रती के वातावरण के गर्म होने से सब गड़बड़ी हो रही है। इसी प्रकार मालवा के लोग भी अपने पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति लापरवाह हैं और मालवा की गहन गंभीर और पग-पग नीर की डग-डग रोटी देनेवाली धरती को उजाड़ने में लगे हुए हैं।

14. 'प्रकृति सजीव नारी बन गई' इस कथन के संदर्भ में लेखक' की प्रकृति नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताएँ स्पष्ट कीजिए।6

उत्तर. लेखक अपने किसी रिश्तेदार के घर गया था। वहाँ उसने एक औरत को देखा। वह औरत रूपवती थी लेखक पर उसके सौंदर्य का आकर्षण इस कदर हावी हुआ कि उसे समस्त प्रकृति में वही औरत नजर आने लगी। वह औरत बिसनाथ के और औरत के रूप में नहीं, बल्कि जूही की लता बन गई, चाँदनी के रूप में लगी जिसके फूलों से खुशबू आ रही थी। उन्हें लगा प्रकृति सजीव नारी बन गई अर्थात् प्रकृति का समस्त सौंदर्य उन्हें उस नारी में समाहित प्रतीत होने लगा।

अथवा

'पहाड़ों में जीवन अत्यन्त कठिन होता है।''आरोहण' कहानी के आधार पर उक्त विषय पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर. पहाड़ों पर जीवन वास्तव में बहुत कठिन होता है। एक कहावत है कि 'पहाड़ दूर से अच्छा लगता है।' यह सत्य ही है। शहर के लोग गरमी या शरदी की छुट्टियाँ व्यतीत करने पहाड़ों पर जाते हैं। उन्हें एक ही दिन में पहाड़ पर नानी याद आ जाती है। जबकि पहाड़ के निवासी जीवनभर प्राकृतिक आपदा, भूस्खलन, पत्थरों के खिसकने तथा भोजन, पानी और दवा की समस्याओं से निरंतर जूझते रहते हैं। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ उनके सुख-सुविधाओं की जटिल समस्या पहाड़ के लोगों को सदैव सालती रहती है। मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा पर्वतीय प्रदेशों की जीवन-शैली कठिन, कष्टदायक जटिल, दुखद तथा संघर्षमय होती है।

□□□